

डॉ. डेविड ए. डिसिल्वा , इब्रानियों, सत्र 10बी, इब्रानियों 11:1-12:3: कार्य में विश्वास (भाग 2)

© 2024 डेविड डिसिल्वा और टेड हिल्डेब्रांट

लेखक की उदाहरणों की सूची उदाहरणों के एक प्रभावशाली संग्रह के साथ समाप्त होती है, जो संक्षिप्त और संक्षिप्त है, ताकि उन लोगों की अंतहीन परेड की एक ज्वलंत और मजबूत छाप बनाई जा सके जिनके उदाहरणों पर समय की अनुमति होने पर अधिक गहराई से विचार किया जा सकता है। और इसलिए, हम पढ़ते हैं, और मैं अभी भी क्यों बोलता हूँ? क्योंकि मेरे पास गिदोन, बाराक, सैमसन, यिप्तह, दाऊद और शमूएल और भविष्यद्वक्ताओं के बारे में बताने के लिए समय नहीं है, जिन्होंने विश्वास के माध्यम से राज्यों को जीत लिया, न्याय किया, वादे प्राप्त किए, शेरों के मुंह बंद कर दिए, आग की शक्ति को बुझा दिया, तलवार के मुंह से बच गए, कमजोरी से शक्तिशाली बन गए, युद्ध में मजबूत हो गए, विदेशी सेनाओं को हराया। महिलाओं ने पुनरुत्थान के द्वारा अपने मृतकों को प्राप्त किया।

दूसरों को यातनाएँ दी गईं, बेहतर पुनरुत्थान पाने के लिए रिहाई स्वीकार करने से इनकार कर दिया। फिर भी, दूसरों को मज़ाक उड़ाया गया, मारपीट की गई, जंजीरों में जकड़ा गया और कैद किया गया। उन्हें पत्थर मारकर मार डाला गया।

उन्हें दो टुकड़ों में काट दिया गया। उन्हें तलवार से मार दिया गया। वे भेड़ की खाल और बकरियों की खाल पहने हुए घूमते थे, भूखे, पीड़ित, दुर्व्यवहार किए गए लोग जिनके लिए दुनिया योग्य नहीं थी, बंजर भूमि और पहाड़ों और गुफाओं और धरती की दरारों में भटकते थे।

और इन सब ने विश्वास के द्वारा प्रमाण प्राप्त करके भी प्रतिज्ञा प्राप्त नहीं की। परमेश्वर ने हमारे लिए कुछ बेहतर प्रदान किया है ताकि वे हमसे अलग होकर लक्ष्य तक न पहुँचें। उदाहरणों का यह संग्रह स्पष्ट रूप से दो भागों में विभाजित है।

पद 32 से 35 ए में, लेखक हमें न्यायियों की पुस्तक में शामिल नामों और घटनाओं की सूची देता है, संभवतः मलाकी तक, कम से कम ऐतिहासिक पुस्तकों के माध्यम से विश्वास की उपलब्धियों का एक प्रकार का सारांश प्रदान करता है। इस खंड के दूसरे भाग में, पद 35 बी से 38 तक, लेखक पैगंबरों और हेलेनाइजेशन संकट के शहीदों के भाग्य के बारे में भी बात करता है, इस प्रकार शहीदों और इज़राइल के महान पैगंबरों की मृत्यु के बारे में कई किंवदंतियों का संदर्भ देने के अलावा विहित इतिहास को पूरा करता है। पद 34 से 35 ए में, फिर से, उपदेशक उन व्यक्तियों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिन्होंने ईश्वर पर भरोसा करके, दुनिया के किसी भी व्यक्ति को अद्भुत या चमत्कारी चीजें हासिल कीं, सैन्य कौशल दिखाया और मृत्यु से समय पर मुक्ति का अनुभव किया, यहां तक कि लाशों को पुनर्जीवित करना भी शामिल था।

दूसरे भाग में, पद 35बी से 38 तक, उपदेशक उन लोगों पर ध्यान केंद्रित करता है जो दुनिया की नज़र में शर्मिंदा और पराजित हारे हुए होंगे, लेकिन जो परमेश्वर के दृष्टिकोण से, पद 32 से 35ए के नायकों की तरह ही विजयी और सम्माननीय हैं। यहाँ संदेश दिया गया है कि, बाहरी

परिस्थितियों की परवाह किए बिना, यह परमेश्वर के प्रति वफ़ादारी और परमेश्वर के वचन पर भरोसा करने की मुद्रा है जो एक व्यक्ति के मूल्य को दर्शाती है, एक ऐसा मूल्य जिसे बाकी दुनिया वास्तव में पहचानने में विफल हो सकती है। इब्रानियों 11, 33 से 34, विश्वासियों की उपलब्धियों का एक बहुत ही संक्षिप्त संग्रह प्रदान करता है।

समूह एक में ज़्यादातर राजशाही से जुड़े उदाहरण याद आते हैं। जिन लोगों ने राज्यों पर विजय प्राप्त की, वे न्यायाधीशों और डेविड की सैन्य सफलताओं को याद करते हैं। न्याय की स्थापना या उसे पूरा करना 2 शमूएल में डेविड के शासनकाल और 1 राजा 10 में सुलैमान के शासनकाल की विशेषताओं को याद दिलाता है।

यह वाक्यांश कि उन्हें वादे प्राप्त हुए, परमेश्वर द्वारा उन लोगों को दिए गए विशिष्ट लाभों की प्राप्ति का व्यापक संदर्भ है, जिन्होंने उन पर भरोसा किया, उदाहरण के लिए, दाऊद, जिसे उसके सिंहासन पर बैठने के लिए एक वारिस का वादा मिला, एक ऐसा सिंहासन जिसे परमेश्वर महान बनाएगा। इसके बाद एक दूसरा समूह आता है। इस सूची में अगली तीन उपलब्धियाँ संकट से मुक्ति पर केंद्रित हैं।

जिन लोगों ने शेरों के मुंह बंद कर दिए, उन्हें निस्संदेह संबोधित करने वालों द्वारा दानियेल के अध्याय 6 में उसके लिए नियुक्त किए गए निष्पादन के रूप से दानियेल के उद्धार के संदर्भ के रूप में पहचाना जाएगा। जिन लोगों ने आग की शक्ति को बुझाया, वे दानियेल के तीन साथियों को याद करेंगे, जिन्हें आग की भट्टी में फेंक दिए जाने के बाद, आग की लपटों से बिना किसी नुकसान के बाहर निकल आए, जैसा कि हम दानियेल अध्याय 3 में पढ़ते हैं। ये चार लोग यहूदी संस्कृति में ईश्वर के प्रति अपनी दृढ़ निष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे, जो मूर्तिपूजा से बचने के नकारात्मक पहलू और मृत्यु के खतरे के बावजूद भी ईश्वर की पूजा और प्रार्थना करते रहने के सकारात्मक पहलू, दोनों में पहली आज्ञा के प्रति उनके अडिग पालन में दिखाई देती है। दानियेल और तीनों बाद में छंद 35बी से 36 में उल्लिखित शहीदों के साथ तीव्र विरोधाभास में खड़े होंगे, जिन्हें मृत्यु से नहीं बल्कि मृत्यु के माध्यम से बचाया जाता है। लेखक का कहना है कि, बेशक, ईश्वर द्वारा किसी का औचित्य सिद्ध करना चाहे इस जीवन में हो या अगले जीवन में, आस्था रखने वाला व्यक्ति इस बात के प्रति आश्चर्य हो सकता है कि यह सिद्ध होगा और पापियों की शत्रुता का सामना करते हुए भी उसी के अनुसार चलेगा।

जो लोग तलवार की धार से बच गए, वे पुराने नियम के कई प्रमुख व्यक्तियों के लिए सही हो सकते हैं और, फिर से, 11:37 में तलवार से मारे गए लोगों से बिल्कुल अलग होंगे। तीसरा समूह उन लोगों पर केंद्रित है जिन्होंने शत्रुतापूर्ण लोगों के समूहों पर इस्राएल की जीत को संभव बनाया। कमज़ोरी से शक्तिशाली बने लोगों को सबसे पहले न्यायियों 16 में सैमसन की कहानी याद आ सकती है, लेकिन यह उन अन्य लोगों को भी याद दिला सकता है जिन्होंने ईश्वर पर भरोसा और उनके प्रति दृढ़ता से शक्तिशाली कार्य किए, जैसे कि नायिका जूडिथ, जो एक ऐसी महिला का आदर्श है जिसे कमज़ोर माना जाता है लेकिन उसे अपने दुश्मनों पर इस्राएल को एक महान जीत दिलाने के लिए एक महान कार्य करने के लिए सशक्त बनाया गया है।

दोनों ही व्यक्तित्व इस्राएलियों को विदेशी ताकत से बचाते हैं। जो लोग युद्ध में मजबूत हुए और जिन्होंने विदेशी सेनाओं को हराया, वे केवल वर्णन हैं जो न्यायाधीशों से लेकर राजा डेविड तक और हसमोनियन परिवार और मैकाबीन विद्रोह में उनकी सेनाओं तक कई व्यक्तित्वों पर लागू होते हैं, जो 166 ईसा पूर्व के आसपास शुरू हुआ था। न्यायाधीशों ने अन्य राष्ट्रों की सैन्य सेनाओं या शिविरों को हराया, जैसा कि डेविड और जूडस मैकाबीस और उसके परिवार के नेतृत्व में लड़ने वाली गुरिल्ला सेना ने किया था।

हालाँकि संबोधित करने वाले लोग खुद किसी सैन्य स्थिति में नहीं हैं, लेकिन यहाँ अल्पसंख्यकों द्वारा बहुसंख्यकों पर विजय प्राप्त करने की गवाही उनके लिए काफी प्रासंगिक और उत्साहवर्धक हो सकती है क्योंकि वे एक स्पष्ट रूप से बड़े और कहीं अधिक सशक्त अविश्वासी दुनिया की शत्रुता के खिलाफ आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं। इब्रानियों 11.35 श्लोक 32 से 34 में इन विजयी व्यक्तियों और श्लोक 35 के दूसरे भाग और उसके बाद के लोगों के बीच एक तरह के पुल का काम करता है जिन्हें सांसारिक सोच वाले लोग पूरी तरह से हारे हुए लोग मानते हैं। महिलाओं ने अपने मृतकों को पुनरुत्थान के द्वारा वापस पा लिया, लेकिन दूसरों को यातना दी गई।

बेहतर पुनरुत्थान प्राप्त करने के लिए रिहाई स्वीकार करने से इनकार करना। इस श्लोक का पहला भाग एक नए विषय, महिलाओं का परिचय देता है, इस प्रकार जो पहले था उसके साथ निरंतरता को तोड़ता है और एक नई शुरुआत करता है। लेखक यहाँ सबसे पहले उन महिलाओं के बारे में बात करता है जिन्होंने पुनरुत्थान के बजाय पुनर्जीवन के माध्यम से अपने मृतकों को वापस पाया।

उदाहरण के लिए, एलियाह के माध्यम से सारपत की विधवा के बेटे को परमेश्वर द्वारा जीवित करना, 1 राजा 17 में बताई गई एक कहानी, या एलीशा के माध्यम से शूनेमी स्त्री के बेटे को पुनर्जीवित करना जैसा कि 2 राजा अध्याय 4 में बताया गया है। उनके उदाहरण मृत्यु पर परमेश्वर की शक्ति की एक और पुष्टि प्रदान करते हैं, एक विषय जो अब तक पूरे स्तुति-ग्रंथ में चला आ रहा है। लेखक ऐसे लोगों को उन लोगों के साथ हल्के विपरीत में प्रस्तुत करता है जो बेहतर पुनरुत्थान प्राप्त करने के लिए मृत्यु तक वफादार रहे, यानी, जो लोग परमेश्वर के राज्य में अनन्त जीवन के लिए उठे, न कि वे जो इस दुनिया के जीवन में फिर से पुनर्जीवित हुए, केवल फिर से मरने के लिए। जिन लोगों को यातनाएं दी गईं, लेकिन जिन्होंने ईश्वर के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखी और विश्वासियों को दिए जाने वाले उनके पुरस्कार में भरोसा बनाए रखा, वे शहीद हैं, जिन्होंने 164 से 160, क्षमा करें 167 से 164 ईसा पूर्व के हेलेनाइजेशन संकट के दौरान एंटीओकस चतुर्थ के अधीन कष्ट झेले, जिनकी कहानी 2 मैकाबीज 6:18 से 7, श्लोक 42 में स्पष्ट रूप से संरक्षित है, और फिर 4 मैकाबीज अध्याय 5 से 18 में विस्तारित की गई है।

इन शहीदों का समावेश यहाँ आश्चर्यजनक नहीं है क्योंकि इन शहीदों ने हेलेनिस्टिक यहूदी धर्म में ईश्वर और ईश्वर के कानून के प्रति प्रतिबद्धता के उदाहरण के रूप में एक महत्वपूर्ण कार्य किया था। वास्तव में, ईश्वर और उसकी वाचा के प्रति उनकी निष्ठा की अनुकरणीय प्रकृति को 2 मैकाबीज और 4 मैकाबीज में उनके कष्टों की कथा में प्रस्तुत किया गया है। इन शहादतों की

कहानी यरूशलेम में बढ़ते तनाव के मद्देनजर सेट की गई है, जो यरूशलेम को एक यूनानी शहर के रूप में फिर से स्थापित करने के बाद हुआ था।

इसराइल की भूमि के हृदय में इस हेलेनाइजेशन के प्रति बढ़ते प्रतिरोध ने सेल्यूसिड सम्राट एंटीओकस IV और उसके स्थानीय यहूदी अधिकारियों की ओर से दमनकारी उपायों को इस हद तक आगे बढ़ाया कि भूमि की पारंपरिक यहूदी प्रथा का पालन करना अवैध हो गया। इसलिए, हम 1 मैकाबीज़ में पढ़ते हैं कि महिलाओं को उनके पुरुष शिशुओं के साथ मार दिया गया क्योंकि उन्होंने उनका खतना करवाया था या बुजुर्ग यहूदियों को इसलिए मार दिया गया क्योंकि वे मूसा के कानून की प्रतियों को छिपा रहे थे और उनकी रक्षा कर रहे थे। 2 मैकाबीज़ 6 और 7 के लेखक और 4 मैकाबीज़ के लेखक जो स्वयं 2 मैकाबीज़ से व्युत्पन्न हैं, नौ शहीदों, एलीज़र नामक एक वृद्ध पुजारी, सात भाइयों के समूह और सात की माँ की बहुत विशिष्ट कहानी बताते हैं।

इन धर्मपरायण यहूदियों को एंटीओकस चतुर्थ के सामने लाया जाता है, जो उन्हें जाने देने के लिए तैयार है, बशर्ते वे किसी विदेशी देवता को चढ़ाए गए सूअर का मांस खा लें। यह मांस टोरा के पालन के विरुद्ध दोहरा प्रहार है, क्योंकि यह अपने आप में अशुद्ध है और साथ ही यह मूर्ति को बलि चढ़ाया गया मांस भी है। इन आकृतियों को एक-एक करके प्रताड़ित किया जाता है, और वे बहादुरी से रिहाई स्वीकार करने से इनकार कर देते हैं, भले ही उन्हें बार-बार रिहा करने की पेशकश की जाती है।

खाने के लिए सहमत हो जाते हैं और यातनाओं से मुक्त हो जाते हैं। वे ईश्वर में विश्वास त्यागने के बजाय खुद को सबसे क्रूर यातनाओं से मरने देते हैं। विशेष रूप से 2 मैकाबीज़ 7 में, यह पुनरुत्थान की आशा है जिसे वे अपनी आँखों के सामने रखते हैं और अपनी अंतिम साँसों के साथ चिल्लाते हैं, जिसके लिए वे दर्द सह रहे हैं और ईश्वर के प्रति अपनी वफादारी बनाए हुए हैं।

ये शहीद अपने दुश्मनों की निंदा और उपहास के बीच मरते हैं। दुनिया की नज़र में वे शर्मनाक मौत मरते हैं। फिर भी, वे दर्द और शर्मिंदगी सहते हैं।

उनके पास इन चरम सीमाओं से बाहर निकलने का एक रास्ता था, एक रास्ता जो वापस सहजता और स्वीकृति की ओर ले जाता था। अब्राहम और कुलपिताओं की तरह, उनके पास उस यात्रा को छोड़ने का अवसर था जो परमेश्वर की आज्ञाकारिता के लिए आवश्यक थी। फिर भी, अब्राहम, मूसा के साथ, और जैसा कि हम यीशु को देखने वाले हैं, इन शहीदों ने अपनी आँखें परमेश्वर द्वारा वादा किए गए इनाम पर टिका दीं, जिसे यहाँ एक बेहतर पुनरुत्थान के रूप में वर्णित किया गया है।

अध्याय 11, श्लोक 36 से 38 में शेष उदाहरण उन लोगों के समूह का विस्तार करते हैं जिन्होंने परमेश्वर के वादों पर अपने भरोसे की खातिर इस दुनिया में शर्म और शत्रुता को सहन किया, बजाय शर्म या हाशिए पर जाने से मुक्ति के लिए उन वादों को त्यागने के। लेखक ने यहाँ छवियों की एक विस्तृत श्रृंखला को संयोजित किया है, जिनमें से प्रत्येक एक ऐसे समूह की समग्र तस्वीर में योगदान देता है जो चरम सीमा पर हाशिए पर है, जिसका समाज में कोई स्थान नहीं है, और

समाज के हाथों हर तरह के अपमान का सामना करना पड़ता है। फिर भी, दूसरों ने उपहास और मारपीट और जंजीरों और कारावास का अनुभव किया।

उन्हें पत्थर मारकर मार डाला गया। उन्हें दो टुकड़ों में काट दिया गया। उन्हें तलवार से क़त्ल कर दिया गया।

वे भेड़ की खाल और बकरियों की खाल पहने हुए, भूखे, पीड़ित, दुर्व्यवहार किए हुए, ऐसे लोग थे जिनके लिए दुनिया योग्य नहीं थी, बंजर भूमि और पहाड़ों और गुफाओं और धरती की दरारों में भटकते हुए घूमते थे। यहाँ, लेखक शायद भविष्यवक्ताओं की मृत्यु की परंपराओं पर विचार करता है। यिर्मयाह को विशेष रूप से ताना मारने, पिटाई करने और अक्सर कैद किए जाने और बेड़ियों या जंजीरों में जकड़े जाने के लिए जाना जाता है।

जबकि पुराने नियम में भविष्यवक्ताओं की मृत्यु का बहुत ज़्यादा उल्लेख नहीं किया गया है, यहूदी किंवदंतियों ने लापता विवरणों को पूरा किया है। इस प्रकार, यिर्मयाह को पुस्तक, द लाइव्स ऑफ़ द प्रोफेट्स, पुस्तक दो में परंपरा के अनुसार पत्थर मारकर मार डाला गया था, जैसा कि द्वितीय इतिहास 24 से ज्ञात यहोयादा के पुत्र जकर्याह के साथ भी हुआ था। द लाइव्स ऑफ़ द प्रोफेट्स और इसायाह के स्वर्गारोहण के रूप में जाना जाने वाला पाठ दोनों इस परंपरा को संरक्षित करते हैं कि इसायाह को दो टुकड़ों में काट दिया गया था।

और यिर्मयाह अध्याय 26 से ज्ञात भविष्यवक्ता उरीयाह को तलवार से मार दिया गया। इन छंदों के शेष वाक्यांश सभ्यता के हाशिये पर जीए गए जीवन को रेखांकित करते हैं। ये चित्र संभवतः, कम से कम आंशिक रूप से, भविष्यवक्ताओं एलियाह और एलीशा के कपड़ों और अक्सर निवास के विवरणों से प्रेरित हैं।

लेकिन लेखक के मन में उन वफादार यहूदियों का अपोकोरेसिस, पहाड़ियों की ओर जाना भी हो सकता है, जिन्होंने हेलेनाइजिंग संकट के दौरान अपवित्रता और उत्पीड़न से बचने के लिए यरूशलेम छोड़ दिया था, उसी समय की अवधि जिसने हमें इब्रानियों 11.35 में संदर्भित शहीदों को दिया। इन व्यक्तियों के वस्त्र स्पष्ट रूप से उन्हें समाज के हाशिये पर रखते हैं। लिनन के वस्त्र कारीगरों और बाजारों में व्यापारियों से आते हैं, लेकिन जानवरों की खाल पहनने वालों को व्यवस्थित समाज से बाहर रखती है। ये वे लोग हैं जिनका अब सामाजिक व्यवस्था में कोई स्थान नहीं है और जो सत्ता में बैठे लोगों के साथ महत्वपूर्ण तनाव और विरोध का अनुभव करते हैं।

इस उपदेश के अभिभाषक अपने स्वयं के अनुभव, अपने समाज में स्थान की हानि, ईश्वर के बड़े लोगों के संदर्भ में हाशिये पर धकेले जाने को प्रस्तुत करने में सक्षम हैं, जो हमेशा इस दुनिया में घर जैसा महसूस करने से दूर होकर ईश्वर के साथ घर जैसा महसूस करने की ओर बढ़ते रहे हैं। अध्याय 13, श्लोक 12 से 14 में उपदेश के अंत में उन्हें स्पष्ट रूप से समाज के भीतर घर जैसा महसूस करने से दूर इस आंदोलन को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। लेखक इस अंश के बीच में एक दिलचस्प टिप्पणी करता है, जिसके लिए दुनिया योग्य नहीं थी।

यह एक आश्चर्यजनक उलटफेर है। लेखक मूल रूप से यह सवाल उठा रहा है कि कौन किसका न्याय कर रहा है, जब ईश्वर के लोगों को हाशिये पर धकेल दिया जाता है और उनके साथ बुरा

व्यवहार किया जाता है। ईश्वर के बच्चे, ईश्वर के अनुयायी का मूल्यांकन प्रमुख संस्कृति के मानकों से नहीं किया जाना चाहिए।

यहाँ, विशेष रूप से, ग्रीको-रोमन संस्कृति। इसके बजाय, बाहरी दुनिया का मूल्यांकन इस आधार पर किया जाता है कि उसने अपने बीच में विश्वासियों के साथ कैसा व्यवहार किया है। इस प्रकार संबोधित करने वालों को उनकी स्थिति में आश्चर्य किया जा सकता है कि एक ईश्वर का सम्मान करने और उसकी आज्ञा मानने की उनकी प्रतिबद्धता के परिणामस्वरूप उन्हें जो निंदा और दुर्व्यवहार झेलना पड़ता है, वह उनके अपने अपमान का नहीं बल्कि अविश्वासियों के अपमान का संकेत देता है।

अध्याय 11 के अंतिम दो छंदों में, लेखक विश्वास के नायकों की इस पूरी परेड द्वारा अनुभव की गई सीमाओं के बारे में बात करता है, जो कि संबोधित करने वालों ने खुद अनुभव किया है। जबकि पूर्व-ईसाई विश्वासियों को ईश्वर से कई वादा किए गए उपहार मिले थे, लेखक का यहाँ एक शाश्वत विरासत का वादा है जिसके लिए और जिसके लिए, उनके विचार में, ईश्वर के सभी लोगों ने एक साथ प्रयास किया है। यह स्वर्गीय मातृभूमि या अडिग राज्य अभी प्रकट होना बाकी था, और सभी विश्वासियों को यह एक साथ प्राप्त होगा।

यह कहते हुए कि विश्वास के इन नायकों ने अभी तक वादा पूरा नहीं किया है, लेखक उन पर कोई दोष या शर्म नहीं डाल रहा है। उन्हें स्वर्गीय मातृभूमि के वादा किए गए लाभ के लिए कई भरोसेमंद वफादार ग्राहकों को लाने के लिए परमेश्वर के प्रावधान में यीशु का बलिदान शामिल था, जो हमेशा के लिए उन लोगों को परिपूर्ण करता है जो परमेश्वर के निकट आते हैं। कुलपति उसी विश्राम में प्रवेश करने की आशा कर रहे थे जो श्रोताओं के लिए खुला है, लेकिन यह नया और जीवित मार्ग तब तक नहीं खोला जा सका, जब तक कि समय की परिपूर्णता में, परमेश्वर के पुत्र ने अपना पुजारी कार्य नहीं किया।

इब्रानियों 11:40 का कुछ बेहतर होना यीशु का अप्रत्यक्ष संदर्भ है, जो इस धर्मोपदेश में हर बेहतर चीज़ के केंद्र में है, बेहतर वादों पर आधारित बेहतर वाचा का बेहतर मध्यस्थ है, जो श्रोताओं को उनके बेहतर देश में उनकी बेहतर संपत्ति तक पहुँचाता है। यह समापन वाक्य अध्याय 12 1 से 3 में आने वाले उपदेश को एक विशेष तात्कालिकता प्रदान करता है। संबोधित करने वाले अध्याय 11 में मनाए गए विश्वास के किसी भी उदाहरण की तुलना में लक्ष्य के अधिक निकट हैं, और उन्होंने वह साधन देखा है जिसके द्वारा परमेश्वर वादे को उसकी अंतिम पूर्ति तक लाता है। उनका आभार और निष्ठा और भी अधिक और दृढ़ होनी चाहिए क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें विश्वास के सभी लोगों के लिए अपने वादे की पूर्ति में एक विशेष स्थान दिया है।

हालाँकि, ज़िम्मेदारी भी बड़ी है। क्या वे इस रिले रेस के आखिर में, उन लोगों के सामने अपनी बैटन को गिरा देंगे जो पहले से ही इस रेस को इतनी अच्छी तरह और इतने सम्मान के साथ दौड़ चुके हैं? इब्रानियों 12:1 से 3 में, लेखक आखिरकार विश्वास के सबसे अच्छे उदाहरण पर पहुँचता है, अर्थात् यीशु, और श्रोताओं को विश्वास की इस रिले रेस में अपना स्थान लेने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। इसलिए, हम भी, लेखक विश्वास के नायकों की प्रशंसा से आगे बढ़कर श्रोताओं को प्रोत्साहित करता है कि वे खुद भी विश्वास के ऐसे लोगों के रूप में जीना जारी रखें

और उन लोगों की श्रेणी में अपना स्थान लें जिन्होंने दृश्य क्षेत्र और इसकी चुनौतियों का सामना ऐसे लोगों के रूप में किया है जिनकी नज़र अदृश्य और भविष्य पर थी जिसे परमेश्वर पूरा करने जा रहा है।

इसलिए जब दर्शकों का इतना बड़ा समूह हमारे चारों ओर है, तो आइए हम भी अपने सामने रखी दौड़ में धीरज के साथ दौड़ें, हर बोझ और पाप को दूर करते हुए जो आसानी से फँसाता है, विश्वास के अग्रदूत और सिद्धकर्ता यीशु की ओर देखें, जिन्होंने अपने सामने रखे आनंद के लिए लज्जा की परवाह न करते हुए क्रूस सहा और परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ पर बैठ गए। उस पर विचार करें जिसने पापियों से अपने विरुद्ध इतनी शत्रुता सहन की ताकि तुम अपने मन में थक कर चूर न हो जाओ। लेखक यहाँ दौड़ में दौड़ने की एथलेटिक छवि को चित्रित करता है, भले ही यह संबोधित करने वालों को ऐसा लगे कि वे दुरुपयोग और हाशिए पर जाने के कारण एक कठिन परीक्षा में भाग रहे हैं।

श्रोताओं को शिष्यत्व के बारे में एथलेटिक स्पर्धा के रूप में सोचने में मदद करके, वह उनके सामने इस यात्रा के अंत में एक सम्मानजनक जीत की संभावना रखता है। अपमान से बचने के लिए अपने पड़ोसी के दबाव में नहीं बल्कि अपने पड़ोसी के दबाव का सामना करते हुए अंतिम रेखा तक दृढ़ रहना चाहिए। और वह उनसे आग्रह करता है कि वे दृढ़ रहें, यह विचार करते हुए कि स्टैंड में कौन बैठा है।

यहाँ, गवाहों के बादल को दर्शकों के बादल के रूप में लिया जा सकता है। वे केवल आस्था के गुण के साक्षी नहीं हैं, बल्कि इस बात के भी साक्षी हैं कि इस उपदेश के अभिभाषक अब कैसे दौड़ में भाग लेंगे। और वे स्टैंड्स ठीठ खेल प्रशंसकों से नहीं भरे हैं, बल्कि पिछले पदक विजेताओं से भरे हैं, उनमें से हर एक।

प्रतिष्ठा का न्यायालय, जिसकी स्वीकृति मायने रखती है और जिसकी अपनी पिछली सफलता प्रतियोगियों की विफलता की निंदा करेगी, सृष्टि से लेकर वर्तमान तक, सभी समय में आस्था के नायकों के इस समूह से बना है। इन दर्शकों ने अपने जीवन में यह प्रदर्शित किया है कि दृढ़ता वास्तव में संबोधित करने वालों में से प्रत्येक पुरुष और महिला की समझ में है। इसलिए, लेखक उन्हें धीरज के साथ दौड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है, इस प्रकार साहस के बड़े विषय पर अपील करता है, कठिनाई और कठिनाई का सामना करते हुए अपने लक्ष्यों में स्थिर रहने का दृढ़ संकल्प।

प्राचीन दुनिया में युद्ध के अभ्यास के संबंध में साहस की अवधारणा अक्सर की जाती थी। युद्ध का मैदान भयावहता, दर्द और सबसे भयानक चीजों का स्थान था, फिर भी सम्माननीय व्यक्ति को शहर-राज्य के प्रति अपने कर्तव्य के प्रति सच्चे रहने के लिए उन कठिनाइयों का सामना करना और सहना चाहिए। उन कठिनाइयों को न सहना कर्तव्य की उपेक्षा और पवित्र दायित्वों और विश्वास का उल्लंघन होगा।

इसी तरह, लेखक यहाँ अपने नायकों पर साहस का आग्रह करता है क्योंकि वे अपने पड़ोसी के हमले का सामना करते हुए इस क्रूर प्रतियोगिता में भाग लेते हैं ताकि उन पर आने वाले आतंक,

दर्द और आतंक को सहन किया जा सके, बजाय इसके कि वे ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य में लापरवाह पाए जाएँ। प्रतियोगिता की छवि नायकों को उनके बुतपरस्त पड़ोसियों के विरोध के प्रति इस तरह से उन्मुख करती है कि निंदा और दुर्व्यवहार के सामने दृढ़ता और ईसाई प्रतिबद्धता और गवाही महान और साहसी मार्ग बन जाती है जबकि बाहरी दुनिया की शर्मनाक तकनीकों के आगे झुकना नीच और कायरतापूर्ण मार्ग बन जाता है। यह एक आश्चर्यजनक कदम है क्योंकि लेखक निंदा के निरंतर सहन को एक सम्मानजनक कार्यवाही में बदल रहा है।

उपदेशक जानता है कि दौड़ को प्रभावी ढंग से चलाने के लिए बिना किसी बाधा के दौड़ना ज़रूरी है। इसलिए, वह संबोधित करने वालों से आग्रह करता है कि वे हर बोझ को हटा दें, हर वह चीज़ जो उन्हें उलझाती है और आगे बढ़ने के रास्ते में बाधा बनती है। नायक की पिछली स्थिति में, उनकी प्रतिष्ठा एक बोझ बन गई थी जो उन्हें ठोकर खा सकती थी अगर वे इसे बरकरार रखने की कोशिश करते, इसे वैसे ही ढोते रहते।

इसके बजाय, उन्होंने मसीह की ओर दौड़ने के लिए इसे एक तरफ फेंक दिया। उनका शारीरिक अस्तित्व एक भार बन गया, जो, फिर से, अगर वे अपने शरीर को नुकसान से मुक्त रखने के लिए इच्छुक होते, तो शायद उन्हें पूरी तरह से दौड़ना बंद करना पड़ता। फिर से, उन्होंने उस भार को फेंक दिया और आगे की ओर दौड़ते रहे।

उनकी संपत्ति तब बोझ बन गई जब वे इसे रखने और मसीह को रखने के बीच फंस गए। फिर से, उन्होंने बेहतर हिस्सा चुना और वजन को एक तरफ रख दिया। और निश्चित रूप से, इन भारों से पहले, पाप थे जो उनके जीवन को भरते थे, पवित्र आत्मा और सुसमाचार के साथ आए ज्ञान के द्वारा उन्हें प्रकट किए गए पाप, लेकिन जो पहले जीवन का एक तरीका थे, उदाहरण के लिए, मूर्तिपूजा में भागीदारी।

वे सभी भार एक तरफ रख देते हैं। यदि अब कुछ लोग डगमगा रहे हैं या ईसाई समूह के साथ खुली संगति से पीछे हट चुके हैं, तो यह स्पष्ट है कि वे अपनी प्रतिष्ठा या अपनी नई आर्थिक स्थिति और इसी तरह की अन्य बातों को लेकर नए सिरे से चिंता में पड़ रहे हैं। ऐसे विश्वासियों को लेखक का आह्वान है कि वे इस दौड़ में आगे की प्रगति को खतरे में डालने वाली हर चीज़ को एक तरफ रख दें।

हमारे सामने जो रास्ता तय किया गया है, वह वही है जिस पर यीशु हमसे आगे दौड़े थे, और यह संबंध लेखक को इब्रानियों 12 पद 2 में यीशु को दौड़ने के तरीके के प्रमुख उदाहरण के रूप में पेश करने के लिए प्रेरित करता है। जिस तरह से यीशु ने लक्ष्य के रास्ते में विरोध का सामना किया, वह कई बच्चों को दौड़ में सफल दृढ़ता के लिए एक आदर्श प्रदान करता है, और इस प्रकार, लेखक श्रोताओं से आग्रह करेगा कि वे यीशु की ओर देखते हुए अपनी दौड़ दौड़ें, जो विश्वास के अग्रदूत और परिपूर्णकर्ता हैं। ध्यान दें कि मैं इसका अनुवाद, विश्वास के अग्रदूत और परिपूर्णकर्ता के रूप में कर रहा हूँ, न कि हमारे विश्वास के अग्रदूत और परिपूर्णकर्ता के रूप में, जैसा कि कई अंग्रेजी अनुवाद करते हैं।

ग्रीक में अधिकारवाचक सर्वनाम हमारे के लिए कोई आधार नहीं है, और ऐसे अनुवाद इस तथ्य को अस्पष्ट करते हैं कि यीशु लेखक द्वारा विश्वास पर इस प्रशंसा में किए गए कार्य में विश्वास का चरम उदाहरण है, जो अध्याय 11, पद 1 से शुरू हुआ था। यीशु विश्वास के अग्रदूत हैं क्योंकि वे विश्वासियों से आगे चलते हैं। कोई व्यक्ति अध्याय 6, पद 20 में हमारे अग्रदूत के रूप में यीशु की चर्चा की तुलना कर सकता है। यीशु भी, उद्धरण, कई बेटों और बेटियों की सेना को महिमा की ओर ले जाता है, जैसा कि लेखक ने इब्रानियों अध्याय 2 पद 10 में कहा है, इस धर्मोपदेश में दूसरा स्थान जहाँ यीशु को अग्रदूत कहा गया है।

एक अग्रणी के रूप में, यीशु ने अपने सामने खड़ी खुशी के लिए कठिनाई और शर्म के माध्यम से अपना रास्ता बनाया, वह खुशी जो अभी भी उनके मार्ग पर चलने वाले कई बेटों और बेटियों के सामने है। ब्रह्मांड में अद्वितीय सम्मान के स्थान पर ईश्वर द्वारा उनका उत्थान ने दुनिया की राय के प्रति उनके दृष्टिकोण को सही साबित कर दिया। उनकी कहानी का अंत इस बात का सबूत है कि उनके जैसे चलने से कई बेटे और बेटियाँ भी महिमा की ओर अग्रसर होंगी।

विश्वास को पूर्ण करने वाले के रूप में, यीशु ने भरोसा या विश्वास को उसके सबसे पूर्ण और परिपूर्ण रूप में प्रदर्शित किया है, और उदाहरणों की इस सूची के अंत में यीशु को रखना इस तरह के पढ़ने का समर्थन करेगा। वह पहले स्थान पर गया है और विश्वास को मूर्त रूप देने के मामले में वह किसी और से कहीं आगे निकल गया है। यीशु का उदाहरण इब्रानियों 12 पद 2 में संक्षिप्त और शक्तिशाली रूप से तैयार किया गया है। यीशु ने, उद्धरण, शर्म की परवाह न करते हुए, क्रूस को सहा, और परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ पर बैठ गया।

क्रूस पर चढ़ाना अपमान और शर्म के मामले में सबसे निचला बिंदु था, और ऐसा जानबूझकर किया गया था। किसी को सूली पर चढ़ाना उसे सार्वजनिक रूप से अपमानित करना था और, वास्तव में, सभी राहगीरों के लिए उसका एक मानव बिलबोर्ड बनाना था, ताकि वे कहें, इस व्यक्ति की तरह मत बनो। इसलिए, इस दुनिया में ईश्वर के प्रति विश्वास में दृढ़ता के लिए शर्म को तुच्छ समझना आवश्यक है।

यह यीशु को जो करना था, उसके मूल में है और यह अध्याय 11 में भी एक आवर्ती विषय है। हमने अब्राहम, मूसा और शहीदों के विश्वास के मार्ग में शर्म को तुच्छ समझने के पहलू पाए। यह अध्याय 10, आयत 32 से 34 में मण्डली के अपने पिछले उदाहरण का भी केंद्र है।

यहाँ, लेखक शायद सिर्फ शर्मिंदा होने के अनुभव को तुच्छ समझने के बारे में नहीं सोच रहा है, बल्कि शर्म को ही तुच्छ समझ रहा है, यहाँ शर्म को बाहरी व्यक्ति के इस मूल्यांकन के प्रति संवेदनशीलता के अर्थ में लिया गया है कि क्या महान है या शर्मनाक। ईश्वर के सामने सम्मान के मार्ग और ईश्वर की उचित माँगों के बारे में बाहरी व्यक्ति की अज्ञानता, उनकी यह पहचानने की क्षमता को विकृत कर देती है कि क्या सम्मानजनक है या नहीं। इस अवधि के दौरान दार्शनिक प्रवचन में इसी तरह के बिंदु उठाए गए हैं।

प्लेटो, सेनेका और एपिक्टेटस सभी अपने पाठकों या शिष्यों को सिखाते हैं कि अशिक्षित, गैर-दार्शनिक की राय के बारे में चिंता करना, सबसे अच्छे रूप में एक विकर्षण है और सबसे खराब

रूप में उस व्यक्ति के लिए पटरी से उतरना है जो सामान्य रूप से सद्गुणी जीवन जीने का इच्छुक है। इस बिंदु पर यीशु का उदाहरण श्रोताओं के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। उन्हें भी शर्म को तुच्छ समझने के लिए कहा जा रहा है।

उन्हें गैर-ईसाइयों की प्रशंसा या निंदा के प्रति किसी भी संवेदनशीलता के कारण अपनी जाति में बाएं या दाएं की ओर झुकने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। यह केवल ईश्वर, मसीह और युगों-युगों से आस्था रखने वाले समुदाय की स्वीकृति है जो उनके विकल्पों और कार्यों को निर्धारित करती है। पाँचवीं शताब्दी के चर्च के पिता जॉन क्राइसोस्टॉम के शब्दों में, यीशु ने अपमानजनक तरीके से मृत्यु को प्राप्त किया, और इसका कोई और कारण नहीं था, बल्कि हमें यह सिखाना था कि मनुष्यों की राय को महत्व न दिया जाए।

क्रूस पर यीशु की मृत्यु उनके लिए एक ऐसी मृत्यु है जिसे सहना पड़ा और इसलिए, जब भी इसका उल्लेख किया जाता है, तो उनके मन में उनके प्रति घृणा और घृणा के बजाय कृतज्ञता और सम्मान की भावना जागृत होनी चाहिए। एक संरक्षक, यीशु जैसे मध्यस्थ द्वारा सहन की गई पीड़ा या कठिनाइयों की ओर फिर से ध्यान आकर्षित करने से, उन लोगों की ओर से भी वफादारी और कृतज्ञता की समान भावनाएँ जागृत होनी चाहिए जिन्होंने लाभ उठाया है। संरक्षक की ओर से इस तरह के आत्म-निवेश की ओर ध्यान आकर्षित करना ग्रीको-रोमन दुनिया में सम्मानसूचक शिलालेखों में आम है।

यह लाभार्थियों में संरक्षक के निवेश की डिग्री का संकेत है और इसलिए, और भी अधिक कृतज्ञता और पारस्परिक निवेश और वफादारी का कारण है। यीशु ने एक महान लक्ष्य तक पहुँचने के लिए या, लेखक के शब्दों में, ग्रीक में, पूर्वसर्ग एंटी है, जो उसके सामने रखा गया आनंद है। टिप्पणीकारों के बीच इस बात पर कुछ चर्चा है कि यहाँ पूर्वसर्ग एंटी को कैसे समझा जाए।

क्या हमें इसे इसके बजाय या खातिर समझना चाहिए? क्या यह उसके सामने रखे गए आनंद के बदले था कि यीशु ने क्रूस सहा, या यह उसके सामने रखे गए आनंद के लिए था कि उसने यह क्रूस सहा? मेरे विचार से, साक्ष्य का संतुलन, खातिर के पक्ष में दृढ़ता से पड़ता है। एक बात के लिए, लेखक इस बात का कोई संकेत नहीं देता है कि यीशु परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बने रहने में किस आनंद को अलग रख रहा था, लेकिन लेखक पूरे उपदेश में उस आनंद के बारे में बहुत स्पष्ट है जो क्रूस के अपने धीरज के परिणामस्वरूप मसीह को मिला, विशेष रूप से उसका महिमामंडन, कुछ ऐसा जिसकी घोषणा इब्रानियों के पहले चार छंदों में ही की गई थी और जिसे लेखक ने अपने पूरे उपदेश में ध्यान में रखा है। उसके सामने रखे गए इस विशेष आनंद का भी यहाँ तत्काल संदर्भ में उल्लेख किया गया है।

शर्म की परवाह न करने और क्रूस सहने के बाद, यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठ गया। तब परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठना उसके सामने रखे गए आनंद का पर्याय बन जाएगा और उसका नाम बदल देगा जिसके लिए यीशु ने यह दर्द और अपमान सहा। यही पूर्वसर्ग अध्याय 12, श्लोक 16 में कुछ ही छंद बाद में भी आता है।

एसाव का मूर्खतापूर्ण और अपमानजनक चुनाव, जिसने, फिर से, एक बार के भोजन के लिए, अपनी विरासत को ज्येष्ठ पुत्र के रूप में बेच दिया, यीशु के चुनाव के विपरीत है। यीशु ने, फिर से, अनन्त सम्मान के लिए, अस्थायी कठिनाई को चुना। यीशु का उदाहरण अरस्तू के निकोमैचेन नैतिकता में साहसी व्यक्ति के अरस्तू के प्रतिमान पर भी फिट बैठता है, अर्थात्, वह व्यक्ति जो किसी अपमान या दर्द के लिए प्रस्तुत होकर प्रशंसा प्राप्त करता है। अरस्तू किसी महान और महान वस्तु के लिए पूर्वसर्ग एंटे का उपयोग करता है।

12:3 में, लेखक यीशु के उदाहरण को श्रोता की स्थिति पर लागू करता है। उस पर विचार करें जिसने पापियों से अपने विरुद्ध ऐसी शत्रुता सहन की ताकि तुम अपने मन में थक कर बेहोश न हो जाओ। विश्वासियों को पापियों से वैर-विरोध और विरोध का सामना करना पड़ता है जैसा कि यीशु ने किया था, हालाँकि उनका कुशती मुकाबला यीशु द्वारा सहन किए गए मुकाबले से कहीं कम क्रूर है, जैसा कि लेखक पद 4 में इंगित करेगा। पाप के साथ अपने स्वयं के कुशती मुकाबले में, आपने अभी तक खून बहाने की हद तक प्रतिरोध नहीं किया है।

यीशु ने पापियों के हाथों बहुत अधिक शत्रुता, पीड़ा और अपमान को सहन किया, जिससे उन लोगों को हिम्मत मिलनी चाहिए, जिनके लिए उसने ये सब सहा, ताकि वे अपनी दौड़ में थक न जाएं। इस बिंदु पर श्रोता के मन में पारस्परिकता के विचार आने चाहिए। थक जाने का मतलब होगा उस व्यक्ति के साथ विश्वास तोड़ना जिसने उन्हें लाभ पहुँचाने के लिए असीम रूप से अधिक सहन किया, जितना कि उन्होंने उन लाभों को बनाए रखने और अपने उपकारकर्ता को बनाए रखने के लिए सहन किया।

उन्होंने अभी तक मसीह के लिए खुद को समर्पित करना शुरू नहीं किया है, जैसा कि मसीह ने उनके लिए खुद को समर्पित किया था। यीशु के प्रति शत्रुता दिखाने वालों को पापी के रूप में लेबल करना भी समूह की सीमाओं को मजबूत करने और विश्वासियों को उनके पड़ोसियों की राय से अलग करने में मदद करता है। विश्वासियों के प्रति गैर-विश्वासियों की शत्रुता, यीशु के जुनून और मृत्यु में लोगों की शत्रुता की तरह, उन्हें भगवान के मूल्यों के गलत पक्ष पर दिखाती है।

यीशु के बाहरी लोगों से शत्रुता के अनुभव को साझा करना श्रोताओं के लिए यीशु के साथ अधिक निकटता से जुड़ने का अवसर बन जाता है, और इस प्रकार उनके लिए यीशु के दुखों के अंतिम परिणाम के साथ-साथ महिमा में प्रवेश करने का अवसर भी बन जाता है। यीशु का अपना उदाहरण श्रोताओं को दिखाता है कि निंदा और हाशिए पर होने के बावजूद, वे परमेश्वर के साथ बहुत अनुग्रह के स्थान पर हैं। इब्रानियों 11:1 से 12:3 में श्रोताओं के लिए अपने पादरी लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लेखक की ओर से बहुत अधिक अलंकारिक शक्ति है।

यह ऐतिहासिक उदाहरणों से प्राप्त प्रमाणों और अनुकरण की भावना, स्वयं के लिए सफलता या सफलता के फल प्राप्त करने की लालसा का संयोजन है, जिसका आनंद कोई अन्य व्यक्ति लेता हुआ देखता है। ऐतिहासिक उदाहरणों से प्राप्त प्रमाण सबसे पहले यह प्रदर्शित करते हैं कि निष्ठावान दृढ़ता का मार्ग संभव है, दूसरा यह कि यह वास्तव में एक सम्मानजनक स्मरण की ओर ले जाता है, और विशेष रूप से यीशु के उदाहरण में यह वास्तव में ईश्वर के राज्य में सम्मान की ओर ले जाता है। आस्था पर यह प्रशंसा अनुकरण की अपील भी है, क्योंकि जब हेलेनिस्टिक और

रोमन काल में लोग लोगों की प्रशंसा सुनते हैं, तो वे स्वाभाविक रूप से अपने लिए उन गुणों या उपलब्धियों को प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं, जिन्होंने किसी अन्य व्यक्ति को सम्मानित और प्रशंसा किए जाने का अनुभव कराया।

यह ग्रीको-रोमन युग की भूमध्यसागरीय संस्कृतियों से आने वाले लोगों के मनोविज्ञान के लिए कुछ हद तक बुनियादी है। लेखक ने विश्वास की एक ऐसी तस्वीर पेश की है जो खास तौर पर संबोधित करने वालों के सामने आने वाली चुनौतियों के लिए उपयुक्त है, और जैसा कि लेखक दिखाता है कि इन लोगों ने न केवल ईश्वर की दृष्टि में बल्कि सदियों से आस्था रखने वाले लोगों की दृष्टि में भी सम्मान प्राप्त किया है, वह श्रोताओं में अनुकरण की भावना जगाता है। वह फिर से उनके दिलों में इसी तरह के सम्मान को पाने की महत्वाकांक्षा को जगाना या कम से कम पुष्ट करना शुरू कर देता है।

अब्राहम की तरह, अभिभाषकों को उस अडिग क्षेत्र की अपनी तीर्थयात्रा में दृढ़ रहने के लिए कहा जा रहा है और उस मातृभूमि की ओर पीछे मुड़कर न देखने के लिए कहा जा रहा है जिसे उन्होंने सामाजिक रूप से, भले ही स्थानिक रूप से न छोड़ा हो। अब्राहम, मूसा, कई शहीदों और पूरे इतिहास में ईश्वर के हाशिए पर पड़े लोगों की तरह, और खुद यीशु की तरह, उन्हें उन लोगों की राय को कोई महत्व न देने की चुनौती दी जाती है जो ईश्वर के मूल्यों के बजाय समाज के मूल्यों को अपनाते हैं। उन्हें ईश्वर की सकारात्मक पुष्टि प्राप्त करने और ईश्वर के लोगों के सम्मानजनक भाग्य में हिस्सा लेने के लिए अविश्वासियों के सामने अपमान को स्वीकार करने की भी चुनौती दी जाती है।

बेशक, यह अध्याय उपदेशक द्वारा संबोधित श्रोताओं की सेटिंग से कहीं आगे जाकर आस्थावान लोगों के लिए विशेष चुनौतियाँ पेश करता है। यह अध्याय हमें हर पीढ़ी में याद दिलाता है कि आस्था ईश्वर, ईश्वर के वादों, ईश्वर के भविष्य और ईश्वर के दायरे को देखती है, जो अंततः वास्तविक और निवेश के योग्य है। इब्रानियों 11 हमारे सामने एक बुनियादी सवाल रखता है : जब आप एक सामान्य दिन की गतिविधि से गुजरते हैं, तो आपके लिए क्या अधिक वास्तविक है? क्या सांसारिक चिंताओं द्वारा लगाए गए एजेंडे आपके विचारों और ऊर्जा में सबसे ऊपर हैं या क्या यह ईश्वर की पवित्र आत्मा द्वारा लगाया गया एजेंडा है, जब आप उन अन्य गौण चिंताओं पर ध्यान देते हैं? क्या आपके श्रम के मूर्त पुरस्कार - संपत्ति, घर, कुछ हद तक विलासिता, भविष्य के लिए वित्तीय सुरक्षा - अधिक वास्तविक हैं? या ईश्वर की खोज के आपके अमूर्त पुरस्कार अधिक वास्तविक हैं? हम अपने समय, प्रतिभा, ऊर्जा और संसाधनों को कैसे लगाते हैं, यह हमें इस बारे में कुछ बताएगा कि हम इस सातत्य में कहाँ खड़े हैं।

आस्था की प्रशंसा हमें यह भी याद दिलाती है कि आस्था हमारी महत्वाकांक्षाओं को ईश्वर को प्रसन्न करने की ओर उन्मुख करती है, जो हम सोचते हैं, कहते हैं, करते हैं और करने से बचते हैं। आस्था के नायकों ने इसका अनुसरण इस तरह किया जैसे कि उनका जीवन और उनका परलोक इस पर निर्भर करता है। क्या हम ऐसा करते हैं? नए नियम के लेखक हमसे भी बात करते हैं, मुक्ति के वादों और न्याय की चेतावनी के बारे में, हमें ईमानदारी से जवाब देने के लिए कहते हैं, यानी उस भरोसे के साथ जो हमारे सभी अस्तित्व और कार्यों को आदेश देता है।

पॉल के शब्दों में, इसलिए हम ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए महत्वाकांक्षी हैं, क्योंकि हम सभी के लिए मसीह की न्यायपीठ के सामने उपस्थित होना आवश्यक है ताकि प्रत्येक को शरीर में किए गए कर्मों का प्रतिफल मिल सके, चाहे वह प्रतिफल अच्छा हो या बुरा। अब्राहम और मूसा की तरह, विश्वास का व्यक्ति इस दुनिया में एक जड़ नागरिक के बजाय एक विदेशी के रूप में रहता है। हमें अपनी जन्मभूमि छोड़ने के लिए कहा जाता है, जरूरी नहीं कि भौगोलिक अर्थ में, लेकिन निश्चित रूप से एक वैचारिक अर्थ में।

हमें अपने समाज के मूल्यों और प्राथमिकताओं में अपनी शिक्षा को त्यागने और अपनी इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, मूल्यों और प्राथमिकताओं को उन चीजों के अनुसार फिर से आकार देने की चुनौती है जिन्हें परमेश्वर ने जाना है। इसके लिए कुछ सचेत, जानबूझकर काम करना पड़ता है क्योंकि हम जाँचते हैं कि कैसे हमारे मूल्यों, हमारी प्राथमिकताओं और हमारे मूल्य की भावना को उन आवाज़ों द्वारा आकार दिया गया है जो परमेश्वर के इनाम को नहीं बल्कि केवल अस्थायी पुरस्कारों को देखते हैं। जैसे-जैसे हम मसीह के शरीर में खुद को और एक-दूसरे को फिर से सामाजिक बनाते हैं, हमें उन मूल्यों और प्राथमिकताओं को शामिल करना चाहिए जिनकी परमेश्वर प्रशंसा करता है, भले ही हमारे पड़ोसी और यहाँ तक कि हमारे परिवार के सदस्य हमें मूर्ख समझें।

मूसा की तरह, हमारे सामने भी दो नियति हैं। हम एक नियति में जन्म लेते हैं। हमें हमारे पालन-पोषण और हमारे धर्मनिरपेक्ष साथियों द्वारा हमारे समाज के भरोसेमंद सदस्य बनने, इसके वादा किए गए उपहारों का आनंद लेने और हमारे समाज के मूल्यों का दर्पण बनने के लिए तैयार किया जाता है।

हम इस नियति को तब पूरा करते हैं जब हम दुनिया के मूल्यों में अपना प्राथमिक समाजीकरण जीते हैं। हालाँकि, मूसा की तरह, हमें यह पहचानने के लिए कहा जाता है कि भले ही इस तरह की नियति में धन, प्रसिद्धि और शक्ति का जीवन शामिल हो, जैसा कि यह दुनिया मानती है, हमारा अंतिम भाग्य पछतावा और पश्चाताप होगा जब परमेश्वर उन लोगों का न्याय करने आएगा जिन्होंने अस्थायी वस्तुओं की खातिर उसके वादों को तुच्छ जाना है। विश्वास के द्वारा, हम एक नई आशा के साथ पैदा होते हैं और हमें अपने सच्चे भाग्य के रूप में उस पुरस्कार की खोज में खुद को पूरी तरह से निवेश करने के लिए कहा जाता है।